डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899
प्रकाशन दिनांक : 4 जुलाई - 2007 . मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - पाँच | अंक - तीसरा | जुलाई - 2007 | मासिक पत्रिका

कौन कहे मैं मर जाणा है 2

(एक शब्द)

कथनी करनी 3

पलटू साहब की बानी
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी. एस. राजस्थान

गुरु शिष्य को कभी नहीं छोड़ता 19

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
77 आर. बी. राजस्थान

घर 27

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक बातचीत
16 पी. एस. राजस्थान

प्रकाश और आवाज 29

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश
16 पी. एस. राजस्थान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर; 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर - 335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।
उप सम्पादक : नंदिनी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया
सहयोग : रेणु सचदेव, जयप्रकाश तपाड़िया, राजेश कुक्कड़, परमजीत सिंह व जस्सी
सन्त बानी आश्रम : 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

Phone : 0154-246 4601 **Mobile :** 94144 - 80303
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in **Website :** www.ajaibbani.org

कौन कहे मैं मर जाणा है

1. कौन कहे मैं मर जाणा है।
   मैं तां कृपाल घर जाणा है॥ 2

2. लमां चौड़ा सागर जेड़ा।
   हौले हौले तर जाणा है॥ 2
   कौन कहे.....

3. जीवन दी राह विच आई।
   मौत मोई ने मर जाणा है॥ 2
   कौन कहे.....

4. जीवन दे नक्शे अंदर।
   रंग सावन दा भर जाणा है॥ 2
   कौन कहे.....

5. वड्डी सारी उमरां भोगी।
   रहना नहीं ऐ घर जाणा है॥ 2
   कौन कहे.....

6. कृपाल दी चर्चा होणी है।
   जा जिनां नाम जप जाणा है॥2
   कौन कहे.....

7. कोई मेरा राह ना रोके।
   जाणा है सचमुच जाणा है॥ 2
   कौन कहे.....

8. तोरो मैंनूं हसके तोरो।
   अपने ही मैं घर जाणा है॥ 2
   कौन कहे.....

9. जद वी चाहेगा अजायब।
   खाली पिंजर कर जाणा है॥ 2
   कौन कहे.....

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

कथनी करनी

पलटू साहब की बानी

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर बड़ी भारी दया की। वह दया शब्दों में बयान नहीं की जा सकती। कबीर साहब ने कहा है:

गुरु को मानुख जाणंदे, ते नर कहिए अंध।
होय दुखी संसार में, अग्गे जम का फंद॥

परमात्मा जब आत्माओं पर दया करता है तो इंसानों में इंसान बनकर आता है अगर परमात्मा देवी-देवता बनकर आता तो हम उसे देख नहीं सकते क्योंकि सूक्ष्म जीवों के साथ हमारा संपर्क नहीं होता अगर परमात्मा जानवर के चोले में आता तो हम उसकी बोली न समझ सकते। कुदरती तौर पर इंसान का इंसान के साथ लगाव होता है और एक-दूसरे की भाषा समझना भी आसान होता है।

जो बच्चा चार युग पहले पैदा हुआ उसे माता-पिता की और माता के दूध की उतनी ही जरूरत थी जितनी कि आज के बच्चे को जरूरत है। यह संसार कभी भी सन्त-महात्माओं के बिना सूना नहीं रहता। परमात्मा सदा ही अपने प्यारों को इस संसार में भेजता रहता है। परमात्मा की दया का अथाह सागर कभी खुष्क नहीं होता, हमेशा जारी रहता है। एक दुनियावी पिता भी अपने बच्चों का फिक्र करता है। हम जिस परमात्मा की अंश हैं वह हमें इस संसार में भेजकर नहीं भूलता।

सन्त जन्म-मरण के दुःखों से ऊपर होते हैं। जिन सन्त-सतगुरुओं ने हमें 'नाम' दिया होता है, हमारी जिम्मेवारी ली होती है; वे हमें नहीं भूलते। वे चाहे संसार से चोला भी छोड़ जाएं! उन्होंने जिन्हें 'नाम' दिया होता है उनके लिए वे हमेशा जीवित रहते हैं और उनकी पहले से भी बेहतर संभाल करते हैं।

हमारा मन कहता है कि अब कोई गुरु पीर हो ही नहीं सकता। ऐसा सोचकर हम धोखे में रहते हैं और लोगों को भी धोखे में डाल देते हैं; जोकि बहुत बड़ा अन्याय है। परमात्मा ने महात्माओं को संसार में भेजा उन महात्माओं ने परमात्मा की भक्ति की, परमात्मा से प्यार किया और परमात्मा में समाकर परमात्मा रूप हो गए।

हम परमात्मा से सीधे फायदा नहीं उठा सकते, उससे मिल नहीं सकते क्योंकि हम नहीं जानते कि परमात्मा का क्या रंग रूप है और उसका ठिकाना कहाँ है? इसलिए वक्त का महात्मा जो परमात्मा रूप हो चुका है जिसने अपनी जिंदगी में खुद प्रेक्टिकल किया होता है वह हमें परमात्मा के रास्ते पर डाल सकता है।

जहाँ पूरे गुरु का जिक्र आता है वहाँ अधूरे भी हैं। इसमें हमारा और गुरुओं का कोई कसूर नहीं! ऐसा हमारी तहकीकात की कमी की वजह से होता है। हमने जिस गुरु को अपना सिर सौंपना है; जिससे अपनी जिंदगी बनवानी है तो हमारा भी फर्ज बनता है कि हम यह जानकारी लें कि क्या इस महात्मा ने जिंदगी में भजन-अभ्यास किया है? इस मार्ग पर कोई कुर्बानी की है? क्या यह विषय-विकारों से ऊपर उठा हुआ है? अगर उसने भजन-अभ्यास नहीं किया और हमारी तरह ही विषय-विकारों में लिप्त है तो वह हमें कैसे मुक्त कर देगा?

आपन मन चंचल और बंधावे धीर।

ऐसे लोगों का अपना मन तो स्थिर नहीं होता लेकिन लोगों को धीरज बंधवाते हैं कि आप लोग भजन करें। कबीर साहब कहते हैं:

कथनी मीठी खांड से, करनी बिखकी लोए।
कथनी छड करनी करे, तो बिखसे अमृत होए॥

कथनी चीनी की तरह मीठी है। कथनी सुनकर लोग वाह! वाह! करते हैं कि इसे बहुत अच्छा बोलना आता है अगर **कथनी** छोड़कर **करनी** करें तो अपना आप कुर्बान करना पड़ता है। जब हम **कथनी** छोड़कर **करनी** करते हैं तो जो करनी पहले जहर जैसी थी वह अमृत

बन जाती है। हम जिस काम का रोज अभ्यास करते हैं हमें उसकी आदत हो जाती है। हमारा मन बेविश्वासा है इसे आदत नहीं होती लेकिन जब यह **करनी** करने लग जाता है तो इसे अंदर से रस आने लग जाता है। किसी महात्मा ने यह नहीं कहा कि आप **कथनी** से परमात्मा को प्राप्त कर लेंगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नानक कागज लख मणां, पढ़ पढ़ कीचे पाओ।
मस्सू तोट न आवी, लेखंण पौण चलाओ।
भी तेरी कीमत न पवे, हौं के वड आखा नाओ॥

आप कहते हैं, ''चाहे आप प्यार से लाखों मन कागज पढ़ लें! चाहे लाखों मन स्याही लेकर तेज रफ्तार से लिख लें! लेकिन आपको शान्ति नहीं आएगी।''

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आजकल तो कई-कई हजार भोग डालने वाले ग्रन्थी मिल जाते हैं। उस समय पढ़-पढ़ाई का रिवाज शुरु ही हुआ था कि सौ सौ भोग डालने वाले भी मिल जाते थे।'' एक गुरुद्वारे के ग्रन्थी ने तो यहाँ तक कहा कि दो हजार भोग डालने तक तो मैं गिनती करता रहा इसके बाद गिनती ही छोड़ दी। सभी सन्त इस बात पर सहमत हैं कि पढ़ने से शान्ति नहीं आती और परमात्मा नहीं मिलता। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जेता पढ़या तेता कढ़या।

ज्यादा पढ़े-लिखे लोग एक-दूसरे से बहस ही करते हैं। रावण चार वेदों का टीकाकार पंडित था। उसे पंडित की उपाधि मिली हुई थी कि यह बहुत ही विद्वान है लेकिन उसके वाचक ज्ञान ने उसे झूठा साबित कर दिया और वह काम के वश होकर पराई औरतों को चुराने लगा।

जब हम महात्मा के सतसंग में जाते हैं तो वहाँ हमें उनके मीठे और प्यारे वचन सुनने को मिलते हैं। हम उनकी बताई हुई युक्ति के मुताबिक भजन-सिमरन करके अंदर चले जाते हैं तो हमें अंदर से सच्चा ज्ञान हो जाता है। यह ज्ञान बाहर से नहीं मिलता अंदर से सच के

साक्षात दर्शन हो जाते हैं। जब हम अंदर टिकना शुरू करते हैं तो हमारा यह शरीर बिना तेल बिना बत्ती के प्रकाश से भर जाता है।

हर महात्मा ने उस प्रकाश का जिक्र किया है। अंदर मीठी धुन, दिव्य धुन सुनने लग जाती है। इसी को अमृत बानी कहा गया है। जब आत्मा इस अमृत बानी को चखती है तो तृप्त हो जाती है। यह ज्ञान हमारे अंदर से सोमे की तरह फूटता है फिर हम बाहर की पोथियों, किताबों के मोहताज नहीं रह जाते सदा के लिए उनसे मुक्त हो जाते हैं। गुरु नानकदेव जी ने कहा हैः

ज्ञानी गुरु बिन भक्त न होय, ज्ञान ध्यान धुन जाणिएं, अकथ कहावे सोय।

वही ज्ञानी है जो धुन का वाफिक हो जाए। यह धुन सच्चखंड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रही है। वहाँ भाषा का सवाल नहीं। यह न हिन्दी में लिखी जाती है न पंजाबी में लिखी जाती है। हम इसका रस बाहर नहीं बता सकते। जिस तरह हम आम चूसते हैं, अंगूर खाते हैं लेकिन हम बाहर इनका स्वाद बयान नहीं कर सकते। बाहर के किताबी ज्ञान से मन नहीं टिकता, आत्मा को शान्ति नहीं आती बल्कि अहंकार आ जाता है कि मैं इतना पढ़ा-लिखा हूँ।

मैं बचपन में जब साधु बना तो साधुओं की, उदासियों की और निर्मलों की मंडली में जाता रहा। उस समय यही सुनने में आता था कि आज इस महन्त की फलाने महन्त से चर्चा होनी है। मुझे भी उस चर्चा में जाने का मौका मिलता रहा। वह चर्चा एक-दूसरे को हराने के लिए थी। दिमागी पहलवान तो बन जाते हैं लेकिन अंदर से खुष्क होते हैं।

बाबा बिशनदास जी एक बड़ी दिलचस्प कहानी सुनाया करते थे। दो पंडित काशी (वाराणसी) यूनिवर्सिटी से पढ़कर आए थे। उस समय हिन्दुस्तान में केवल काशी ही यूनिवर्सिटी थी, इसी को पढ़ाई का गढ़ समझा जाता था। जो काशी से पढ़कर आता था कोई उसके आगे बोल नहीं सकता था। एक जमींदार ने काशी पढ़े उन दो पंडितों को अपने घर खाने के लिए बुलाया। एक पंडित बाहर स्नान करने के लिए गया

तब जमींदार ने दूसरे पंडित से पूछा, ''आप बहुत पढ़े-लिखे हैं क्या वह पंडित जी भी अच्छे पढ़े-लिखे हैं?'' ज्यादा पढ़े-लिखे दूसरे की तारीफ सुनकर खुश नहीं होते, उनमें अहंकार होता है। पंडित ने कहा, ''वह तो बैल है।'' यह सुनकर जमींदार चुप हो गया। जब दूसरा पंडित स्नान करने के लिए गया तो जमींदार ने उससे पूछा, ''वह पंडित जी बहुत पढ़े-लिखे विद्वान होंगे?'' इस पंडित ने कहा, ''वह तो गधा ही है।''

जमींदार ने सोचा कि एक बैल और दूसरा गधा है इनके लिए अच्छा खाना बनाने की क्या जरूरत है? जमींदार ने एक के आगे गधे की और दूसरे के आगे बैल की खुराक रख दी। यह देखकर दोनों पंडित परेशान होकर कहने लगे, ''हमारे साथ मजाक क्यों किया जा रहा है?'' जमींदार ने कहा, ''मैं इतने बड़े पंडितों के साथ मजाक कैसे कर सकता हूँ? आप लोग एक-दूसरे को जो कहते हैं मैंने उसी के मुताबिक आपके आगे खुराक रख दी है।'' दोनों पंडित अपनी **कथनी** पर शर्मिन्दा हुए। कबीर साहब कहते हैं:

घाट जुगाती धर्मराय सबका झारा ले।
जाँकी जैसी चाकरी ताँको तैसा दे॥

हमारा मन अंदर से खुश जरूर होता है कि हमने दरवाजा बंद कर लिया! हमें कौन देख रहा है। हम ताकतवर हैं चाहे किसी को भी लूट लें! लेकिन ऐसा नहीं है। परमात्मा ने आपके अंदर एक ऐसी ताकत रखी हुई है जिसे धर्मराज या इंसान का देवता कहते हैं। मुसलमान उसे अजरा-ईल फरिश्ता कहते हैं। उसे किसी की गवाही की जरूरत नहीं कि यह महात्मा है या चोर, डाकू है। हम **कथनी** करके चार दिन अपने आपको महात्मा भी कहलवा लें लेकिन वह अंदर बैठा सब देख रहा है।

ज्ञानी मूल गवाँया, आप भए कर्ता।
ताँते संसारी भला, जो सदा रहे डरता॥

कबीर साहब कहते हैं कि ज्ञानी लोग चार किताबें पढ़कर कहते हैं, '' तू भी ब्रह्म और मैं भी ब्रह्म।''

हम जुबान से कह देते हैं कि परमात्मा हर जगह है लेकिन देखा नहीं। जिसे देखा नहीं न उसका डर है और न ही उससे प्यार है। सांसारिक लोग तो पढ़े-लिखों से भी डरते हैं अगर पढ़ा-लिखा किसी के घर चला जाए तो उसकी बहुत इज्ज़त करते हैं।

अगर आपकी सुरत अंदर नहीं लगी, आपने सच को प्रकट नहीं किया तो बाहर का ज्ञान कालिख के टीके की तरह है। सन्त हमें समझाते हैं कि **कथनी** छोड़कर **करनी** करें। करनी के बिना विद्वान उस गधे की तरह है जिसकी पीठ पर हजारों मन चंदन लदा हुआ है लेकिन उसका प्यार भस्म के साथ है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नानक ते नर असल खर, जो बिन गुण गर्व करन्त।

जिनके अंदर 'नाम' प्रकट नहीं वे अहंकार करते हैं और दूसरों की निन्दा करके गलती कर रहे हैं। जो अंदर जाकर सच को प्रकट कर लेते हैं वे किसी की निन्दा नहीं करते; वे जानते हैं कि परमात्मा सबके अंदर बैठा है। आपके आगे पलटू साहब का शब्द रखा जा रहा हैः

वाचक ज्ञान न नीका ज्ञानी, ज्यों कारिख का टीका॥

यहाँ पढ़े-लिखे का सवाल नहीं, यह तो **करनी** का मत है। महाराज सावन सिंह जी के पास सतसंग में बैठे हुए कभी-कभी संगत सवाल-जवाब भी करने लग जाती थी। आप बहुत हँसमुख और प्यार से भरे हुए थे। एक प्रेमी ने कहा कि महाराज जी बुल्ले ने कहा थाः

इको अल्फ तेरे दरकार ते इल्मों बस करीं ओ यार।

महाराज सावन ने हँसकर कहा, ''यह तो बुल्ले ने कहा था लेकिन मैं तो कहता हूँ कि अंदर जाने के लिए अल्फ की भी जरूरत नहीं है।'' कबीर साहब कहते हैंः

साखी लाया बनाएके, इत उत अक्षर काट।
कहे कबीर कब लग जिए, जूठी पत्तल चाट॥

लोगों की जूठी पत्तलें चाटकर कब तक जिएंगे? चार बातें इस किताब से और चार बातें उस किताब से सीख ली लेकिन सब किताबों का सार इंसानी जामा है। सारे इल्म इस छह फुट के ग्रन्थ से फूट-फूटकर निकलते हैं। रूहानियत विद्या की अम्मा है जिसने इसे पढ़ लिया उसे सारे ग्रन्थों के सार का ज्ञान हो जाता है। वाचक ज्ञान से अहंकार पैदा हो जाता है। महात्मा पढ़ने को बुरा नहीं कहते। वे कहते हैं, ''सोच समझकर पढ़ें और जो पढ़ते हैं उस पर अमल करें।''

पढ़या इल्म अमल न कीता, पढ़या फेर पढ़ाया की।
आदत खोटी न गवाई, मत्था फेर घिसाया की।
अपना काम न पूरा कीता, विच मसीते आया की॥

अगर पढ़कर उस पर अमल न किया तो पढ़ने का क्या फायदा? भाई को बुलाकर उससे पढ़वा लिया। गुरुद्वारे, मस्जिद में रोज जाने का क्या फायदा अगर वहाँ जाने का मतलब ही नहीं समझा?

महाराज सावन सिंह के पास कई पाठी भी रहते थे। आस-पास के गाँव के लोग अपने घर में पाठ करवाने के लिए पाठी ले जाया करते थे। इसी तरह प्रेमी वहाँ से एक पाठी ले गए। जब घर के लोग बैठते तो वह पाठी एक-दो तुकें सुना देता; जब घर के लोग नहीं बैठते तो वह घूमता रहता। घर के लोगों ने पाठी से कहा, ''भाई जी! आप पाठ खत्म करें।'' पाठी ने कहा, ''यह खत्म करने वाली चीज़ नहीं, यह तो समुद्र है; यह जिंदगी बनाने वाली चीज़ है।''

इतने में सतसंग का दिन आ गया। घर के लोगों ने महाराज सावन सिंह जी के पास जाकर कहा कि आपका पाठी तो पाठ समाप्त नहीं कर रहा। महाराज जी ने कहा, ''जब तक आप लोग बैठते नहीं तो क्या वह पाठ दीवारों को सुनाए?'' सन्त पढ़ने को बुरा नहीं कहते लेकिन पढ़ने का तभी फायदा है अगर हम उस पर अमल करें।

महात्माओं ने मन के साथ संघर्ष किया, परमात्मा के साथ मिलाप किया। महात्माओं ने अंदर जो नजारे देखे उन्होंने उन नजारों को ग्रन्थों-

पोथियों में दर्ज कर दिया। आज हम उन नजारों का जिक्र पढ़ते हैं जिनकी मदद से उन्होंने उन नज़ारों और घाटियों को पार किया उसे उन्होंने सन्त-सतगुरु कहकर लिख दिया। गुरु नानकदेव जी ने कहाः

बलिहारी गुरु आपणे, दयोहाड़ी सदवार।
जिन मानस ते देवते किए, करत न लागी वार॥

आप कहते हैं कि मैं दिन में एक बार नहीं, करोड़ों बार अपने गुरु पर बलिहार जाता हूँ जिसने हमारी राक्षस बुद्धि को देवता बुद्धि बना दिया। पहले हम जीवों का घात करते थे अब जीवों की रक्षा करने लग गए हैं। गुरु दरबार में जाकर यह समझ आई कि जिंदगी हर किसी को प्यारी है जो किसी पर दया नहीं करता उस पर परमात्मा कैसे दया करेगा? गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

अड़सठ तीर्थ सगल पुण्य, जीव दया परवान।

जो अपने ऊपर दया करता है वही दूसरों पर दया करेगा। वह जानता है कि दया क्या चीज़ है? जब हम किसी जीव पर दया करते हैं तो हमें अड़सठ तीर्थों का पुण्य मिल जाता है। जीभ के चसके की खातिर दूसरे की जान लेने में एक सेकिण्ड भी नहीं लगाते। अपनी जान बचाने के लिए मुर्गी काँ-काँ और बकरी प्याँ-प्याँ करती है। सुअर अपनी जान बचाने के लिए कहाँ-कहाँ छिपता है? अगर हमारे अंदर दया होती तो क्या हम इन बेजुबानों पर छुरियाँ चलाते?

बिन पूँजी को साहू कहावे, कौड़ी घर में नाहीं॥

आप कहते हैं, ''बिना पूँजी के शाह कहलवाता है घर में एक कौड़ी भी नहीं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

चूहा खड्ड न मावी, तिक्कल बध्धा छज।

खुद संशय में है और दुनिया को पीछे लगा लेता है कि आओ मैं आपको रास्ता बताता हूँ।

गुरु सदाय अज्ञानी अंधा, कैसो मार्ग पाए।

परमात्मा सन्तों को शाह, 'नाम' का भंडारी बनाकर भेजता है अगर कोई भंडारी होते हुए शूम बन जाए तो उससे दुनिया को क्या फायदा हो सकता है? अगर कोई भंडारी बनकर बैठ जाए लेकिन उसके खजाने में एक कौड़ी भी न हो तो वह किसी को क्या देगा? जिसके भंडार में बेशुमार वस्तु हो वही दाता है। सन्त-सतगुरु दोनों हाथों से 'नाम' की दौलत लुटाते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

नाम रतन धन कोठरी, खान खुली घट माहें।
सेत मेत ही देत हूँ, ग्राहक कोई नाहें॥

सन्त मुफ्त में ही दात लुटाते हैं लेकिन कोई भाग्य कहाँ से लाए! तुलसी साहब ने *रतनसागर* में बयान किया है कि सन्त इस संसार में ऐसे आते हैं जैसे कोई सौदागर विलायत से अपना माल लेकर आता है और अपने माल के फायदे बताता है। लोग सुनकर आते हैं कि बाहर के देशों से माल आया है चलो खरीदें! लेकिन जब वह माल की कीमत बताता है तो लोग पीछे हट जाते हैं।

इसी तरह सन्त भी सच्चखंड से मालिक का दिया हुआ माल लेकर इस संसार में आते हैं। उस माल के बारे में सुनकर बहुत से लोग आते हैं लेकिन जब सन्त उसकी कीमत माँगते हैं कि देख प्यारेया! तन, मन, धन सब कुछ ही गुरु का समझना पड़ेगा अगर हमने तन गुरु को सौंप दिया तो क्या इस तन को विषय-विकारों में लगाएंगे? मन गुरु को सौंप दिया तो क्या इस मन से सकंल्प-विकल्प उठाएंगे? धन गुरु का समझ लिया तो क्या इस धन को शराबों-कबाबों या बुरे कर्मों में लगाएंगे?

सच्चे शिष्य को सिर्फ बैठने की ही जरूरत होती है, वह जीते जी ही मर जाएगा। हम जीते जी कब मरते हैं? जब हम अपने फैले हुए ख्याल को नौं द्वारों से खाली करके आँखों के पीछे ले आते हैं तब शरीर इस तरह हो जाता है जैसे कि पराए घर में बैठे हों। फर्क यह है कि अगर हम सच में मर जाएं तो दोबारा शरीर में नहीं आते लेकिन 'शब्द' का अभ्यासी जब चाहे शरीर में आ जाता है। पलटू साहब कहते हैंः

भजन तेल की धार, साधना अधकह साधी।

जैसे तेल की धार नहीं टूटती उसी तरह सन्तों की वृति नहीं टूटती। कई प्रेमी कहते हैं, ''एक दिन काम तो बनने लगा था, दर्द हुआ तो उठ गए।'' हम इसलिए भजन-अभ्यास पर नहीं बैठते कि शरीर दुखता है अगर इस शरीर को गुरु का समझें तो क्या ऐसा हो!

ज्यों चौकर के लड्डू खावे, कहा स्वाद तेह माहीं।

पलटू साहब बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं, ''खाने वाला चाहे बूर के कितने भी लड्डू खा ले उसे कोई स्वाद नहीं आता। वह इन लड्डुओं को मुँह में डालकर पछताता है क्योंकि इनका स्वाद बकबका होता है। जिसने ये लड्डू नहीं खाए वह सोचता है कि यह तो बहुत लड्डू खा रहा है। इसी तरह वाचक ज्ञान भी बूर के लड्डुओं जैसा है इसमें न शान्ति है न तृप्ति है।''

ज्यों सुवान कुछ देखके कूके, तिसने तो कछु पाई॥
वाकी कूक सुने जो कूके, सो अहमक कहवाई॥

पलटू साहब समझाते हैं कि जैसे एक कुत्ता तो किसी को देखकर भौंकता है लेकिन दूसरा कुत्ता उसकी भौंक सुनकर भौंकता है ऐसे कुत्ते को अहमक कहते हैं। शहरों में तो इस बात का पता नहीं चलता लेकिन गाँवों में तो कई कुत्ते दूसरे कुत्तों की भौंक सुनकर सारी रात भौंकते रहते हैं। घरवाले उन्हें मारते भी हैं कि ये सोने नहीं देते लेकिन वे बाज नहीं आते।

एक महात्मा ने तो सब कुछ देखा है और वह अपना तजुर्बा अपने सेवकों को बयान करता है। वह जो कहता है करता है। दूसरा उसकी तरह महात्मा बनकर दिखाता है कि इस पोथी में यह और उस पोथी में वह लिखा है। पलटू साहब ऐसे लोगों के लिए कहते हैं :

झूठ आशिकी करे, मुल्क में जूती खाहे।

बातन सेती नहीं होई राजा, नेह बातन गढ़ टूटे।

केवल बातें करके अगर कोई यह कहे कि मैं राजा हूँ; मेरा इतने मुल्कों पर राज्य है वह राजा नहीं बन सकता। बातों से कोई किला नहीं टूटता। स्वामी जी महाराज एक मिसाल देकर समझाते हैं कि चूहे एक दिन अपने परिवार में बैठकर बिल्ली की बातें कर रहे थे कि बिल्ली क्या है? एक चूहे ने कहा कि मैं बिल्ली के ऊपर बैठ जाऊँगा। दूसरे ने कहा कि मैं उसकी पूँछ खींच लूँगा। तीसरे ने कहा कि मेरे दाँत बहुत तेज हैं मैं उसे काट लूँगा। उनमें से एक ने कहा कि बिल्ली की म्याऊँ वाली जगह कौन पकड़ेगा? बिल्ली यह सब सुन रही थीः

बिल्ली बिल पाए आए पुकारी, आए सूरमें बड़े सिपाही।
सुनकर म्याऊं चयों घबराए, इक इक भागे नजर न आए॥

बिल्ली आकर बोली कि तुम लोगों ने सलाह तो कर ली है, तुम बड़े सिपाही हो, लो! अब मैं आ गई हूँ। बिल्ली को देखकर जिस चूहे को जहाँ जगह मिली वह जान बचाकर भागा।

प्यारेयो! जो लोग बिना सोचे समझे किसी के पीछे लगते हैं उनकी हालत भी चूहों जैसी होती है। काल बिल्ली की तरह आ जाता है। काल हौवा नहीं कि हम उसे बातों से डरा लेंगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गल्लीं किसे न पाया।

अगर बातों से ही परमात्मा मिल जाता तो कोई पीछे न रहता। कबीर साहब कहते हैंः

सुखिया सब संसार है खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है जागे और रोए॥

आप महात्माओं की जीवनी पढ़कर देखें! महाराज सावन सिंह जी ने बाइस साल तक खोज की। कई-कई रातें लगातार अभ्यास करते रहे। आपने एक बैरागन बनाई हुई थी अगर नींद आती तो उस पर खड़े होकर अभ्यास करते फिर भी यह कहते कि यह मेरी कमाई नहीं, यह बाबा जयमल सिंह जी की दया है।

महाराज कृपाल रात भर रावी दरिया में खड़े होकर अभ्यास करते थे ताकि नींद न आ जाए! आप एक रात अभ्यास के लिए जा रहे थे तो एक पुलिस वाले ने पूछा, ''आप कौन हैं इतनी रात को कहाँ जा रहे हैं?'' महाराज जी ने कहा, ''भजन-सिमरन के लिए जा रहा हूँ तू भी आ जा।'' पुलिस वाले ने कहा, ''नहीं जी! यह आपको ही मुबारक हो।''

पश्चिम में ऐसे बहुत से प्रेमी हैं जिन्होंने गुरु अमरदेव जी की कहानी सुनी कि गुरु अमरदेव कीली के साथ अपने केश बाँधकर अभ्यास किया करते थे। मैंने न्यूयार्क में ऐसे कई प्रेमी देखे हैं जो चारपाई की रस्सी के साथ अपने केश बाँधकर खड़े होकर अभ्यास करते हैं। बहुत से प्रेमी 'नाम' लेकर कठिन से कठिन साधना भी करते हैं।

मुल्क मेह तब अमल होईगा, तीर तुपक जब छूटे॥

प्यारेयो! जो सरकार अपनी ताकत का प्रदर्शन नहीं करती, सख्ती नहीं दिखाती उस मुल्क में कभी शान्ति नहीं होती। इसी तरह हमारा शरीर एक गढ़ है। हम जब तक सतगुरु से 'शब्द' की ताकत लेकर इसे सख्ती से नहीं बिठाते तब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और हमारा मन हमें चैन से बैठने नहीं देते। सतगुरु का 'शब्द' अंकुश का काम करता है।

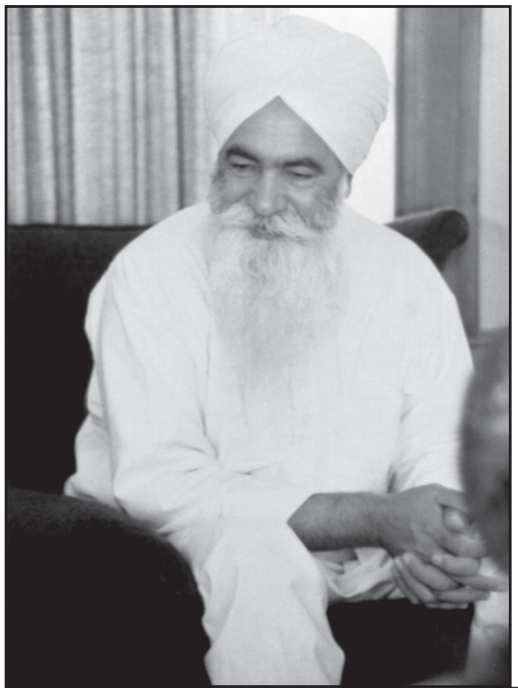

हाथी बहुत ताकतवर जानवर है। जैसे महावत के पास अंकुश होता है। महावत हाथी के ऊपर बैठकर उसे जिस तरफ मोड़ना चाहे अंकुश के इशारे से

मोड़ लेता है; हाथी चूँ-चरा नहीं करता। इसी तरह हमारा मन भी हाथी है; गुरु का 'शब्द' अंकुश है।

हम जब तक इस शरीर के अंदर गुरु की ताकत का प्रदर्शन नहीं करते तब तक इस शरीर के अंदर शान्ति नहीं आती। सन्त जोर देकर कहते हैं, ''प्यारेयो! आप इस गढ़ (शरीर) के अंदर जीते जी दाखिल होवें।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नेह ते पंज जवान, गुरु थापी दित्ती कंड जिओ।

महात्मा ने अपने गुरु से ताकत लेकर इन पाँचों को अपने काबू में किया होता है। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैंः

चिड़ियां तों मैं बाज लड़ाऊँ, तद ही गोविंद सिंह नाम कहाऊँ॥
सवा लाख से एक लड़ाऊँ, तद ही गोविंद सिंह नाम कहाऊँ॥

सन्तों ने आत्मा को चिड़िया कहकर बयान किया है। मन आत्मा से जो चाहे करवाता रहता है। मन की प्रेरणा से इन्द्रियाँ स्वाद लेती हैं। जहाँ इनका भुगतान होता है वहाँ आत्मा साथ जाती है। सुख-दुःख आत्मा भी महसूस करती है क्योंकि आत्मा मन के आगे बेबस है।

जब हम सिमरन करके आँखों के पीछे आकर सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार करके गुरु को प्रकट कर लेते हैं तब गुरु के सच्चे शिष्य बन जाते हैं फिर मन की परवाह नहीं करते। जो आत्मा पहले चिड़िया की तरह बेबस थी वह मन का सामना करने वाली बन जाती है।

शास्त्रों में हर इन्द्री की ताकत दस हजार ऐरावत हाथी के बराबर और मन की ताकत पच्चीस हजार ऐरावत हाथी के बराबर लिखी हुई है। जब गुरु हमें 'शब्द' की ताकत देकर इन इन्द्रियों से लड़वाता है वह तभी गुरु कहलवाने का हकदार होता है। महात्मा सुनी-सुनाई बातें नहीं करते, वे कहते हैं कि यह **कथनी** का नहीं **करनी** का मजबून है।

मुझे बहुत से प्रेमियों के पत्र आते हैं। प्रेमी लिखते हैं कि हमसे भजन नहीं होता, मन नहीं टिकता। मैं कहता हूँ कि मन काल का

एजेन्ट है। मन की ड्यूटी है कि कोई भी आत्मा 'शब्द-नाम' की कमाई न कर पाए। जब मन अपने मालिक का काम ईमानदारी से करता है तो हमारा भी फर्ज बनता है कि हमने अपने गुरु के साथ भजन-सिमरन का जो वायदा किया है उसे पूरा करें।

बातों से किले फतह नहीं होते, बातों से कोई राजा नहीं बन सकता। हम जब तक गुरु से शक्ति लेकर मन पर हावी नहीं होते तब तक मन पर फतह हासिल नहीं कर सकते।

बातन से पकवान बनावे, पेट परे नहीं कोई॥
पलटू दास करे सोई कहना, कहे सेति क्या होई॥

पलटू साहब प्यार से कहते हैं कि बातों से पेट नहीं भरता। दलील के लड्डुओं से मुँह मीठा नहीं होता। नोट नोट कहने से कोई साहूकार नहीं बनता। हम जो कुछ कहते सुनते हैं उस पर अमल करना है। कहते समय यह भी सोचना है कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ क्या मैं खुद ऐसा करता हूँ? लेकिन हमारी यह हालत है:

अवरो को उपदेश दे, मुख में पड़हे रेत।
रास बिरानी राख ते, खाया घर का खेत॥

हम लोगों के घरों की चौकीदारी करते हैं, अपने घर में आग लगी हुई है। पहले अपने घर की आग बुझाएं फिर लोगों को उपदेश दें।

पलटू साहब प्यार से समझाते हैं, ''परमात्मा सदा ही अपने प्यारे सन्तों को संसार में भेजता है। सन्तों के बिना संसार कभी सूना नहीं रहता। सन्त हर जाति को अपनी जाति समझते हैं, सारे संसार को अपना घर समझते हैं। **सन्त एक नमूने का जीवन जीते हैं अगर हम अपना तन, मन, धन उन्हें सौंप दें तो ही कुर्बान हैं। सन्त अपने काम के लिए सेवक की एक सुई तक भी ग्रहण नहीं करते अगर वे ऐसा करते हैं तो वे सन्त नहीं गुरु नहीं।**''

गुरु पीर सदाए मंगण जाए, ताँ के मूल न लग्गी पाए।
घाल खाए कुछ हत्थों दे, नानक राह पछाणें से॥

जो गुरु पीर कहलवाकर सेवकों के आगे हाथ फैलाता है आप भूलकर भी ऐसे के आगे अपना माथा न टेकें। परमात्मा उसी के लिए दरवाजा खोलता है जो अपनी कमाई में से लंगर में डालता है।

रविदास जी ने सारी जिंदगी जूतियों की सिलाई करके अपने परिवार और साध-संगत की मुफ्त सेवा की। हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी एक सफल किसान थे, पेंशन भी लेते थे। महाराज कृपाल भी अपनी पेंशन में ही गुजारा करते रहे अगर सन्त-सतगुरु मजदूरी या खेती करें तो इसमें सेवक को क्या ऐतराज है? स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुरु नहीं भूखा तेरे धन का, उनपे धन है भक्त नाम का।
पर तेरा उपकार करावे, भूखे प्यासे को दिलवावे॥
उनकी मेहर मुफ्त तूं पावे, जो उनको प्रसन्न करावे।
उनका खुश होना है भारी, सतपुरुष निज कृपा धारी॥

सन्त हमसे किसी गरीब की मदद करवाकर हमारे ऊपर उपकार करते हैं। सेवक के धन को पवित्र करने के लिए उसका धन लंगर में लगवा देते हैं। सन्त अपनी खुद की कमाई भी लंगर में लगाते हैं।

पलटू साहब ने हमें छोटे से शब्द में समझाया कि यही बेहतर है कि **कथनी** छोड़कर **करनी** करें। हमें चाहिए कि हम अपना जीवन सन्तों के कहे मुताबिक ढालें, इस जिंदगी को सफल बनाएं। परमात्मा ने हमें इंसानी जामें का जो अमोलक समय दिया है इससे पूरा फायदा उठाएं।

हीरे जैसा जन्म है, कौडी बदले जाए।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि मौत के समय हमें पछतावा होता है कि परमात्मा ने हमें इंसानी जामें का जो कीमती समय दिया था हमने उसे विषय-विकारों में खो दिया। हमें चाहिए हम अपने जीवन को परमात्मा के लेखे में लगाएं। परमात्मा ने हमें यह जीवन अपनी भक्ति के लिए दिया है, हम परमात्मा की भक्ति करें।

U U U

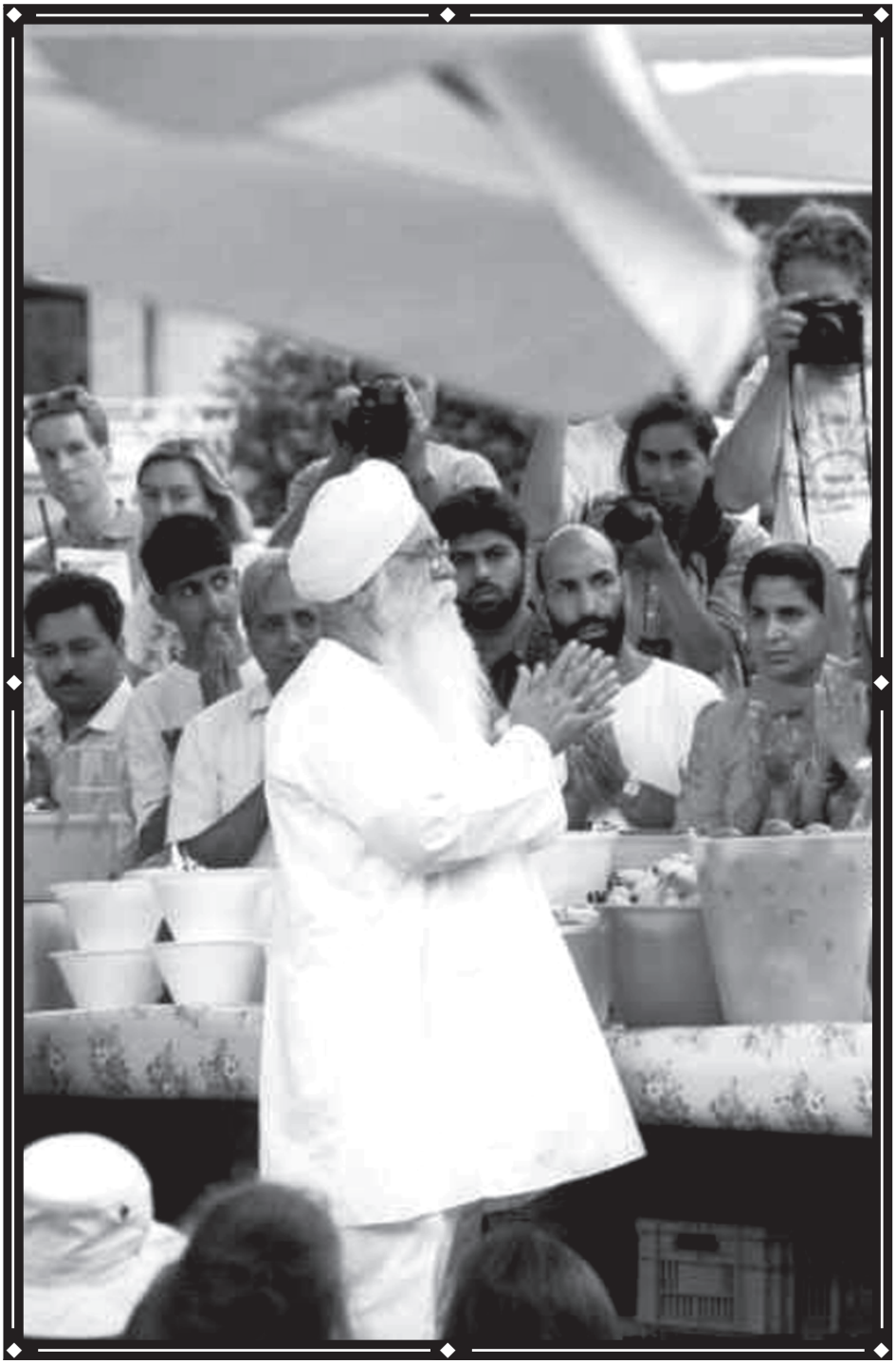

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु शिष्य को कभी नहीं छोड़ता

77 आर. बी. राजस्थान

एक प्रेमी :- कल आपने कहा था कि जब छोटे बच्चे गलती करते हैं, तब हमें उनके साथ सख्ती से पेश नहीं आना चाहिए क्योंकि वे सही और गलत में फर्क नहीं जानते लेकिन जो बड़े बच्चे सही और गलत का फर्क समझते हुए भी गलती करते हैं उनके साथ कैसे पेश आना चाहिए?

बाबा जी :- भारत में शिक्षक उन बड़े बच्चों को डाँटते और पीटते भी हैं जो जानबूझकर गलत काम करते हैं लेकिन आपके देश में ऐसा नहीं है इसलिए ऐसे बच्चों के साथ बहुत समझदारी से पेश आना चाहिए। आप प्यार के हथियार से ही उनका इलाज कर सकते हैं।

भारत में शिक्षक जरूरत पड़ने पर बच्चों के साथ बहुत सख्ती से पेश आते हैं। वे बच्चों के भले के लिए उन्हें डाँट सकते हैं, पीट सकते हैं। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं वे अपना भला-बुरा समझने लग जाते हैं तब भी माता-पिता और शिक्षक उनको डाँटने का अधिकार रखते हैं। यहाँ तक कि जब उनकी शादी हो जाती है तब भी माता-पिता उन्हें सलाह देने का अधिकार रखते हैं लेकिन आपके देश में ऐसा नहीं है। मैंने सुना है कि आपके देश में ऐसा कानून है कि आप बच्चों को पीट नहीं सकते इसलिए आप बच्चों के साथ प्यार का बर्ताव करें।

बहुत बार देखा गया है कि कई बड़े बच्चे शरारती होते हैं उन्हें शिक्षक को परेशान करने की आदत होती है। कभी-कभी शिक्षक को ऐसे बच्चों के साथ पेश आने में तकलीफ होती है लेकिन **गुरु शिष्य को कभी नहीं छोड़ता।** ऐसे मामलों में आप उन बच्चों के माता-पिता को उन बच्चों के व्यवहार के बारे में बताएं ताकि वे आपकी मदद कर सकें।

भारत में एक ऐसा भी समय था जब बच्चों के दिल में शिक्षक के प्रति बहुत इज्ज़त होती थी। वे शिक्षक को ज्ञानगुरु मानते थे, उनसे

शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करते थे। शिक्षक भी बच्चों को शिक्षा और ज्ञान परमात्मा का उपहार और एक दान समझकर देते थे। वह समय आज के समय से बहुत अलग था। उन दिनों विद्यार्थी शिक्षक की बहुत इज्ज़त करते थे। विद्यालय से पास होने के बाद और अच्छा ओहदा प्राप्त करने के बावजूद भी वे अपने गुरु को याद रखते थे।

अब हालात बहुत बदल गए हैं। आपने अखबारों में पढ़ा और रेडियो पर सुना होगा कि शिक्षकों व प्राध्यापकों के विरोध में कई हड़तालें हुई हैं। विद्यार्थी अपने शिक्षकों की परवाह नहीं करते इसलिए आजकल शिक्षकों के लिए बच्चों को पढ़ाना बहुत कठिन है।

मैं फिर भी यही कहूँगा कि शिक्षक में सहनशक्ति होनी चाहिए। आखिर बच्चे मासूम हैं, अज्ञानी हैं इसलिए आपको उनके साथ बहुत धीरज और प्यार से पेश आना चाहिए। चाहे वे कितनी भी गलतियाँ करें अगर आप उनसे नाराज हो जाते हैं, उनको कक्षा से बाहर निकाल देते हैं या उन्हें विद्यालय से निकाल देते हैं तो उनका भविष्य बिगड़ जाएगा। जरा सोचें! जब आप मुँह मोड़ लेंगे, वे ज्ञान पाने के लिए और कहाँ जाएंगे और उन्हें कौन स्वीकार करेगा? बच्चों का भविष्य बनाना आपके हाथ में है अगर आप बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे तो वे आपकी बहुत इज्ज़त करेंगे।

विद्यालय में बहुत से बच्चे शरारती होते हैं। वे शिक्षकों की इज्ज़त नहीं करते लेकिन वे जब बड़े हो जाते हैं तो अपनी गलती समझते हैं, पछताते हैं। हर इंसान जब सही होश में आता है तब अपनी गलती समझता है लेकिन समय बीतने पर क्या किया जा सकता है? इसलिए बच्चों का भी कर्तव्य है कि वे शिक्षकों को समझें उनकी इज्ज़त करें क्योंकि उन्हें शिक्षकों से ज्ञान और शिक्षा मिल रही है।

अगर हमें किसी से अच्छे गुण मिल रहे हों चाहे वह हमें पीटे तो भी हमारा सिर उसके सामने झुका रहना चाहिए। हमें सदा उसकी इज्ज़त करनी चाहिए क्योंकि वह हमें कुछ अच्छे गुण और अच्छी शिक्षा

देता है। बच्चों के लिए जरूरी है कि वे शिक्षक के मूल्य को समझें, उनकी इज्ज़त करें तभी उन्हें शिक्षक से अधिक फायदा होगा।

मैं जब आर्मी में था उस समय बहुत से शिक्षक मुझे वायरलेस ऑपरेटर का काम सिखाते थे। वायरलेस ऑपरेटर का काम सिर्फ पढ़े-लिखे लोग ही कर पाते हैं। आप जानते हैं कि मैं अनपढ़ था। मैं शिक्षकों के बिना यह काम कभी भी नहीं सीख सकता था। मैं हमेशा अपने शिक्षकों की बहुत इज्ज़त करता था इसलिए वे मुझ पर विशेष ध्यान देते थे। वे अपने व्यक्तिगत समय में भी मुझे काम सिखाते थे। इस तरह उन्होंने मुझे श्रेष्ठ सिग्नलमैन बना दिया। मेरे कहने का मतलब यह है अगर हमारे दिल में किसी के प्रति इज्ज़त हो तो वह हमें अच्छे गुण या अच्छी शिक्षाएं देता है तो दुनिया में हमारी इज्ज़त होती है।

एक प्रेमी :- आज हम सोच रहे थे कि आपने हमें बच्चों की परवरिश करने के बारे में जो बताया, उसी तरीके से आप हमारे साथ व्यवहार करते हैं। आप बहुत सौम्य हैं और हमारी गलतियों को माफ करते हैं।

बाबा जी :- गुरु नानक साहब ने कहा है कि बच्चे चाहे कितनी भी गलतियाँ करें फिर भी माँ उनकी किसी भी गलती को अपने दिल में नहीं रखती अगर वह माफ न करे तो अपने बच्चों को बड़ा नहीं कर सकती। इसी तरह शिष्य चाहे कितनी गलतियाँ करते हैं गुरु हमेशा उन्हें माफ करते हैं अगर गुरु शिष्य की गलतियों को याद रखे तो वह शिष्य की आत्मा को कभी सच्चखंड नहीं ले जा सकता। गुरु इस दुनिया में माफीनामा लेकर आते हैं। इसी तरह जब हम बच्चों से व्यवहार करते हैं तो हमें उनकी गलतियाँ माफ कर देनी चाहिए।

पूर्ण शिष्य एक अच्छे बच्चे जैसा बर्ताव करता है। वह हमेशा गुरु से प्रार्थना करता है, ''मैं आपका बच्चा हूँ। आप मेरी सारी गलतियों को माफ कर दें।''

एक प्रेमी :- जिस समय हम एक दोस्त को 'सन्तमत' छोड़ते हुए देखते हैं; उस समय हम उसकी किस तरह मदद कर सकते हैं?

बाबा जी :- अगर वह दोस्त आपकी बात सुनता है तो आप उसे प्यार से समझाएं कि यह पंथ अच्छा है, वह इस पंथ को न छोड़े। हम इस पंथ को तभी छोड़ते हैं जब हमारा मन बलवान हो जाता है। आप जानते हैं कि मन काल का एजेन्ट है। काल नहीं चाहता कि कोई भी आत्मा परमात्मा की भक्ति करके अपने सच्चे घर वापिस चली जाए! जब मन ऐसे हालात पैदा करता है तो प्रेमी पंथ छोड़ देते हैं।

जब आप किसी को ऐसा करते हुए देखें तो आप उसे प्यार से कहें, ''भाई! तुम अपने आपको अपने मन से बचाओ। यह मन बहुत बलवान है, कुछ दिन भजन-अभ्यास करो।'' मुझे विश्वास है अगर आपका दोस्त कुछ दिन भजन-अभ्यास करेगा तो उसे आंतरिक शान्ति मिलेगी और वह पंथ को छोड़ देने का विचार बदल देगा। भजन-अभ्यास के चोर ही पंथ को छोड़ते हैं अगर वे लगातार भजन-अभ्यास करते रहें तो वे कभी भी पंथ को छोड़ने का विचार ही नहीं कर सकते।

लोग मन के वश होकर पंथ को छोड़ सकते हैं लेकिन **गुरु शिष्य को कभी नहीं छोड़ता**। यह ऐसे है जैसे कोई बच्चा बुरी संगत में पड़कर माता-पिता को छोड़ देता है और जुआ, शराब व सब तरह के खोटे कर्म करने लग जाता है, पिता के पैसों को बर्बाद करता है। यह सब वह लम्बे समय तक करता रहता है लेकिन एक समय ऐसा आता है जब वह महसूस करता है कि वह बहुत बुरा काम कर रहा है।

मन हमेशा बलवान नहीं रहता, एक समय आता है जब आत्मा बलवान हो जाती है। इंसान को अंदर से आवाज आती है जो उसे याद दिलाती है कि वह बुरा कर्म कर रहा है।

इसी तरह अगर कोई सतसंगी पंथ छोड़कर बुरे कर्म करने लग जाए! कुछ समय बाद उस प्रेमी को अपनी अंतरात्मा की आवाज महसूस होती है कि जिस गुरु ने तुझे 'नामदान' दिया है उसके हाथ बहुत लम्बे हैं। गुरु उसे तब तक नहीं छोड़ता जब तक सच्चखंड न पहुँचा दे।

सतसंगी को पंथ में लौट आने की प्रेरणा अंदर से ही मिलती है। मैंने बहुत से लोगों के मामले में देखा है जो मन के वश होकर पंथ छोड़ गए लेकिन एक दिन ऐसा आया जब वे गुरु के पास लौट आए और उन्होंने माफी माँगी।

बहुत बार ऐसा होता है कि जिस आत्मा ने पंथ छोड़ दिया वह फिर से उस गुरु के संपर्क में नहीं आती जिससे उसको 'नामदान' मिला था। कुछ समय बाद वह आत्मा दूसरे शरीर में फिर गुरु के संपर्क में आती है और गुरु उस आत्मा को सच्चखंड पहुँचा देते हैं।

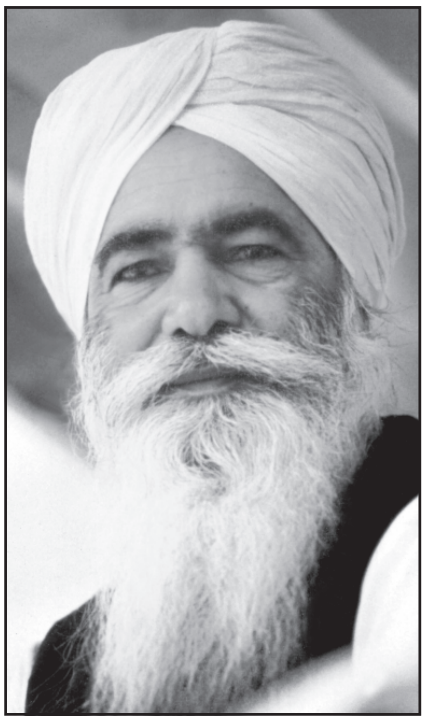

आप जानते हैं कि गुरु गोविंद सिंह जी को मुगलों से लड़ना पड़ा क्योंकि उन दिनों मुगल बादशाह भारत पर राज्य कर रहे थे। हिन्दुओं पर जोर जबरदस्ती करके उन्हें सताया जा रहा था। मुगल हिन्दुओं की बेटियों और औरतों को उठा ले जाते थे; उनके साथ कुकर्म करते थे। हिन्दू धर्म खतरे में था। लोगों ने गुरु गोविंद सिंह जी को मदद करने के लिए कहा, आपने मुगलों से लड़कर उनकी मदद की।

उस समय गुरु गोविंद सिंह जी पंजाब में आनन्दपुर के किले में रहकर मुगल सेना से लड़ रहे थे। एक बार मुगल सेना ने आपके किले को घेर लिया जिस कारण बाहर निकलने का रास्ता नहीं रहा। गुरु गोविंद सिंह और उनके शिष्यों को किले में रहकर ही इंतजार करना पड़ा। मुगल सेना वहाँ बहुत महीनों तक रही। धीरे-धीरे सारा अन्न और सामान खत्म होने लगा, लोगों के लिए जीना मुश्किल हो गया।

कुछ शिष्यों ने गुरु गोविंद सिंह जी से कहा, ''आप मुगल सेना के साथ सन्धि कर लें ताकि हम किले से बाहर जाकर कुछ अन्न इत्यादि ला सकें।'' गुरु गोविंद सिंह जी ने उनसे कहा, ''नहीं! मैं मुगलों पर भरोसा नहीं कर सकता क्योंकि ये अच्छे लोग नहीं हैं। ये ढोंग कर रहे हैं। जैसे ही आप लोग किले से बाहर निकलेंगे ये आप लोगों को मार देंगे। बेहतर है कि आप लोग किले में रहकर भजन-सिमरन करें, गुरु पर भरोसा रखें गुरु आपकी मदद करेगा।''

आप जानते हैं कि आदमी ज्यादा देर तक भूखा नहीं रह सकता। भूख से व्याकुल होकर उन्होंने गुरु गोविंद सिंह जी को छोड़ने की बात सोची! कुछ प्रेमियों ने फिर गुरु गोविंद सिंह जी से कहा, ''आप मुगलों के साथ सन्धि कर लें ताकि हम इस किले को छोड़ सकें नहीं तो हम आपको छोड़ रहे हैं।'' गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा, ''ठीक है! जो लोग मुझे छोड़ना चाहते हैं वे इस कागज पर लिख दें कि वे मुझे छोड़कर जा रहे हैं। मैं मुगलों के साथ सन्धि नहीं करूँगा। आपको गुरु पर भरोसा होना चाहिए क्योंकि गुरु जानता है कि आपके लिए क्या अच्छा है?''

पंजाब के मजल नामक जगह के कुछ प्रेमियों ने गुरु गोविंद सिंह जी पर विश्वास नहीं किया और उन्हें छोड़ने का फैसला कर लिया। ये लोग गुरु गोविंद सिंह जी के पास आए और इन्होंने कागज के टुकड़े पर लिख दिया, ''आज से आप हमारे गुरु नहीं हैं। हम आपको छोड़कर जा रहे हैं।'' जब ये प्रेमी अपने घर लौटे तो उनकी बीबीयों ने पूछा, ''गुरु साहब कैसे हैं?''

आप जानते हैं कि जब एक सतसंगी गुरु के दर्शन करके घर-परिवार में वापिस आता है तब परिवार के दूसरे सदस्य भी गुरु के बारे में पूछते हैं। तब उन्होंने पूरी कहानी सुनाकर कहा कि हमने गुरु को छोड़ दिया है। परिवार के सदस्य और उनकी बीबीयाँ उनसे बहुत नाराज हुईं। बीबीयों ने अपने पतियों से कहा, ''बेहतर है कि आप हमारे कपड़े पहनकर घर में बैठें। हम आपके बदले लड़ाई के मैदान में जाएंगी

और गुरु के लिए लड़ेंगी।'' बीबीयों की बात सुनकर उन मर्दों को अपनी करतूत पर बड़ी शर्म आई।

उस समय गुरु गोविंद सिंह जी पंजाब में मुक्तसर नामक जगह पर लड़ रहे थे। ये प्रेमी बहुत शर्मसार थे, इन्होंने मुगल फौज के साथ लड़ना शुरू कर दिया। गुरु साहब इन्हें लड़ते हुए देख रहे थे। उस लड़ाई में इस समूह के बहुत से लोग काम आए। इस समूह में से दो प्रेमी भाई महासिंह और माता भागो बचे। आपने देखा कि भाई महासिंह और माता भागो अभी भी जिन्दा थे लेकिन बुरी तरह घायल हो चुके थे।

जब मुगलों की फौज चली गई। गुरु गोविंद सिंह जी ने उन दोनों को पानी पिलाया और भाई महासिंह से कहा, ''मैं तुमसे बहुत खुश हूँ, तुम जो चाहो माँग लो।'' भाई महासिंह ने जवाब दिया, ''मेरी एक ही अरदास है कि आप टूटे हुए रिश्ते को जोड़ दें।'' गुरु साहब ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मैंने तुम्हारे साथ रिश्ता नहीं तोड़ा, वह अभी भी कायम है। गुरु नानकदेव जी तुमसे बहुत खुश हैं उनका दरबार खुला है। तुम जो माँगोगे तुम्हें मिल जाएगा।'' भाई महासिंह ने कहा, ''गुरु जी! मुझे कुछ नहीं चाहिए बस! आप टूटे हुए रिश्ते को जोड़ दें।''

गुरु गोविंद सिंह जी ने वह कागज का टुकड़ा निकाला जिस पर लिखा हुआ था कि आप हमारे गुरु नहीं हैं, हम आपको छोड़ रहे हैं। गुरु गोविंद सिंह जी ने उनसे कहा, ''इस कागज को पढ़ो, इस पर लिखा है कि आप हमारे गुरु नहीं हैं और हम आपको छोड़ रहे हैं। मैंने जब आनन्दपुर साहब छोड़ा इस जरूरी कागज के टुकड़े के सिवाय सारा सामान वहीं छोड़ दिया था। मैं तुम्हें दिखाना चाहता था कि इस कागज पर तुम लोगों ने क्या लिखा है? क्या कहीं यह भी लिखा है कि मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ?''

चाहे शिष्य गुरु को छोड़ दे लेकिन **गुरु शिष्य को कभी नहीं छोड़ता**, गुरु शिष्य को उसके जीवन का मकसद याद दिलाता है और उसे सही रास्ते पर लेकर आता है। U U U

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक बातचीत

घर

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

आपने इस **घर** के बारे में काफी कुछ पढ़ा है और इस बारे में बहुत कुछ सन्त बानी पत्रिका में भी छप चुका है। उसी **घर** या शरीर का गुणगान किया जा सकता है जिसमें बैठकर हम अच्छे कर्म करते हैं। अच्छा इंसान बन जाने का मतलब यह नहीं कि आपने अच्छे कर्म किए हैं। हम सिमरन की महिमा बयान नहीं कर सकते।

सभी सन्तों ने इस सच्चाई को स्वीकार किया है अगर हमने बहुत अच्छे कर्म किए हों तो ही परमपिता परमात्मा हमें पूर्ण गुरु के चरणों में लाता है अगर हमारा भाग्य और भी अच्छा हो और हमने पूर्वजन्मों में बहुत अच्छे कर्म किए हों तो ही हम गुरु की आज्ञा का पालन कर सकते हैं। हमें गुरु जैसा हुक्म दें हम वैसा कर सकें।

हम जिस परिवार में जन्म लेते हैं वहाँ हमारे माता-पिता ही हमारे शिक्षक होते हैं। वे हमें अपनी भाषा और परिवार के सदस्यों से परिचित करवाते हैं। इन सांसारिक शिक्षकों को सिमरन और अंदर जाने के बारे में ज्ञान नहीं होता कि हमारे अंतर में कितनी गहराइयाँ हैं? हमें जहाँ जाना है वह रास्ता कितना ऊँचा है? वे इस विषय से अनजान होते हैं।

सन्त-सतगुरु हमारे अंतर की गहराई और ऊँचाई को जानते हैं। जब हम पूर्ण सतगुरु के चरणों में पहुँचते हैं तो वे हमें काल की शक्तियों से बचाकर अपने **घर** ले जाते हैं।

सन्त-सतगुरु महान आत्माएं हैं। उन्होंने मनुष्य जन्म पाकर अपने अंदर परमपिता परमात्मा को प्रकट किया होता है। वे हमें परमात्मा के साथ जोड़ते हैं। वे हमें अंतर में जोड़ते ही नहीं बल्कि हर कदम पर हमारी मदद भी करते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

मोरे गृह सतगुरु आए, सूते दिए भाग जगाए।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''जिन्होंने अंदर जाकर गुरु का दर्शन कर लिया उन्होंने अपना जीवन सफल बना लिया।''

जब इस गरीब आत्मा का सोया हुआ भाग्य जागा तब सच्चखंड के शान्त **घर** में रहने वाला परमपिता परमात्मा कृपाल नहीं रुक सका। उसे इस गरीब आत्मा पर रहम आया। वह इस दुनिया में आया और उसने मुझसे जो करवाना चाहा वह करवाया। मैं उसकी कृपा से ही उसके हुक्म का पालन कर सका।

मैं पिछले दस दिनों से आपको 'शब्द-नाम', सतसंग और गुरु की महिमा के बारे में समझाता रहा हूँ। आशा करता हूँ कि आप सब कुछ समझ गए होंगे और यह भी उम्मीद करता हूँ कि जिन बातों के बारे में मैंने कहा है आप उन्हें अपने जीवन में अपनाकर अपने जीवन को अच्छा व शान्तिमय बनाएंगे।

पहले दिन जब मैंने आपको सिमरन पर बिठाया, तब कहा था, ''हम अपने पिछले जन्मों के बुरे कर्मों का फल भुगतने के लिए मजबूर हैं लेकिन नए कर्म करने के लिए आजाद हैं। चाहे कोई कितने भी अच्छे कर्म कर ले उसे कोई सहारा नहीं है, 'नाम' ही एकमात्र सहारा है।''

जैसे अंधे को लकड़ी मिल जाती है तो वह उसके सहारे चल सकता है। इसी तरह 'नाम' सहारे का काम करता है। 'नाम' के सहारे हम बिना किसी कठिनाई के अंतर्यात्रा कर सकते हैं। जो नाम का सिमरन करते हैं उनके लिए अंतर्यात्रा खुली किताब बन जाती है। नाम के सहारे हम अंतर में बहुत से सुंदर दृश्य और सुंदर वस्तुएं देख सकते हैं।''

मैंने आपको यही समझाने का प्रयत्न किया है कि गुरु के दिए हुए पाँच पवित्र शब्दों का सिमरन करके हम अपने जीवन को अच्छा और शान्तिमय बना सकते हैं।

U U U

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश

प्रकाश और आवाज

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

प्रभु ने इस इंसानी जामें की सृजना बहुत अच्छे तरीके से की है। हम जो कुछ बाहर इन आँखों से देखते हैं वह प्रभु ने हमारे अंदर सूक्ष्म रूप में रखा हुआ है। महात्मा पीपा कहते हैं:

जो ब्रह्मांडे सोई पिंडे, जो खोजे सो पावे।
पीपा परम व परम तत्व है, सतगुरु होए लखावे॥

ये सूक्ष्म चीज़ें हमारे शरीर के अंदर हैं। हमें परम तत्व की खोज करने के लिए स्थूल जामें से सूक्ष्म, सूक्ष्म जामें से कारण और कारण जामें से भी आगे जाना है लेकिन महान गुरु की मदद के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते।

हम जानते हैं कि जब वह महान कलाकार प्रभु माता के पेट में हमारी सृजना करता है तब माता को भी पता नहीं होता कि वह महान कलाकार किस समय कलाकारी कर गया। वह बच्चे के अंग पैदा करता है, उसकी रोजी-रोटी का इंतजाम करता है। यह वही जानता है कि इसे औरत के जामें में लाना है या मर्द के जामें में लाना है या इसकी शक्ल बिगाड़कर ही पैदा करना है।

गुरु रामदास जी कहते हैं कि आज तक कोई भी सन्तों के विज्ञान तक नहीं पहुँचा। बेशक आज विज्ञान का युग है। प्रभु ने पाँच तत्वों का इंसान बनाया है कोई चार या छह तत्वों का बनाकर दिखाए? अगर एक तत्व की कमी हो तो शरीर को रोग घेर लेते हैं अगर एक तत्व बढ़ जाए तो शरीर बिगड़ जाता है। मिट्टी, हवा, पानी और आकाश एक दूसरे के विरोधी हैं लेकिन 'शब्द' की ताकत की वजह से ही ये सब एक-दूसरे से मिलकर रहते हैं।

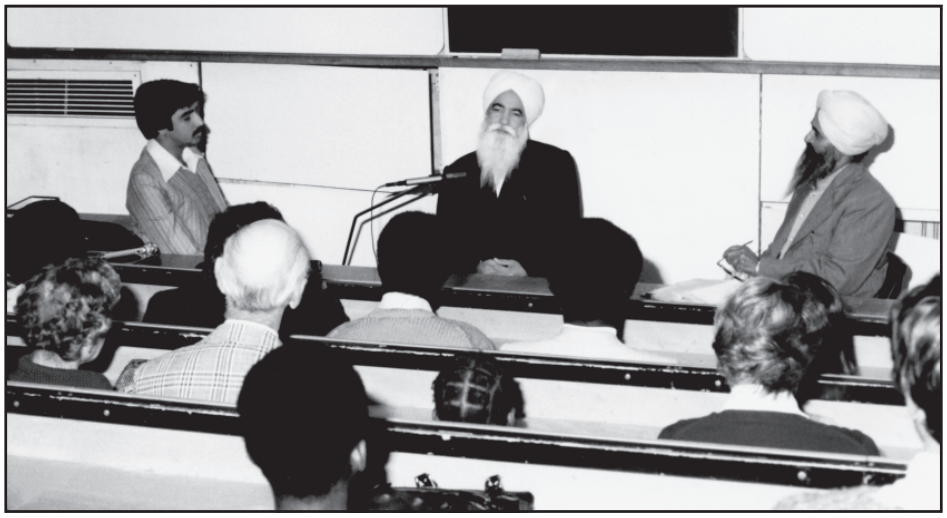

अगर हम अंधेरी रात में रास्ता भूल जाएं ! उस समय हम **प्रकाश** या **आवाज** की तलाश करते हैं अगर उस समय हमें कोई आवाज सुनाई देती है तो हम उस आवाज के पीछे-पीछे चल पड़ते हैं कि यह आवाज किसी बस्ती या शहर से आ रही है। हम उस **आवाज** की ताकत की वजह से बच जाते हैं अगर हमारे पास टॉर्च हो तो हम टेढ़े-मेढ़े रास्ते से बच जाते हैं। उस **प्रकाश** की वजह से अपना रास्ता आसानी से तय कर लेते हैं। इसी तरह उस महान कलाकार ने हमारे अंदर अपना **प्रकाश** और अपनी **आवाज** भी रखी हुई है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अंतर जोत निरंतर बानी।

हम सबके अंदर राम-नाम की ज्योत जल रही है और आवाज भी आ रही है। मुसलमानों की पवित्र किताब में आता है कि यह बाँग है, कलमा है। हिन्दू महात्मा इसे राम-नाम, दिव्यधुनि और आकाशवाणी कहकर बयान करते हैं।

प्यारेयो ! आज जो डाक्टर, वकील, इंजीनियर लोगों की सेवा कर रहे हैं और अच्छी जिंदगी व्यतीत कर रहें हैं, वे अपने आप डाक्टर, वकील या इंजीनियर नहीं बने। वे स्कूल, कॉलेज गए उन्होंने अपने उस्तादों की सेवा की और उनका कहना माना तो ही कामयाब हुए।

डाक्टर, वकील, इंजीनियरों को उनके उस्तादों ने कुछ घोलकर नहीं पिलाया। उनके अंदर तब्दीली इसलिए आई क्योंकि उन्होंने उस्तादों की सोहबत की और मेहनत की। विद्या की ताकत सबमें मौजूद होती है लेकिन उस्तादों का कहना मानने वाले कामयाब हो जाते हैं; बाकी लोगों में विद्या तो है लेकिन सोई रह जाती है।

सन्त हमारा धर्म परिवर्तन नहीं करवाते, कुछ घोलकर नहीं पिलाते। प्रभु ने सब कुछ पहले से ही हमारे अंदर रखा हुआ है। हमें अंदर के संसार की जानकारी नहीं कि अंदर परमात्मा ने किस तरह के रास्ते बनाए हुए हैं! उन्हें कैसे पार करना है? वह महान गुरु बिना किसी मुआवजे के हमें अंदर ले जाकर परमात्मा के आगे खड़ा करके कहता है, ''यह तेरा बच्चा है, भूल बख्शवाने आया है।''

आप जो गुफा देखने जा रहे हैं उसके बारे में आपने बहुत कुछ पढ़ा और सुना है। मैं आपको इतना ही बताऊँगा कि यह जगह मैंने अपनी मर्जी से नहीं बनाई थी। यह जगह उस महान गुरु की मेहरबानी और उसके हुक्म से ही बनाई गई। आपने मेरी आँखें संसार की तरफ से बंद करके अंदर की तरफ खोली।

मेरे ऊँचे भाग्य थे कि मैं आपका हुक्म मान सका और आपकी दया प्राप्त कर सका। आज भी आपकी महान दया है। बहुत से प्रेमियों ने अपना तजुर्बा बताया कि उनका 'शब्द' कई सालों से बंद था। इस जगह आकर उनका 'शब्द' खुल गया। उन्हें 'शब्द' की आवाज आनी शुरू हो गई।

मैं आशा करता हूँ कि आप पाँच पवित्र शब्दों की महानता को समझेंगे। मैं रोज ही आपको अभ्यास में बिठाने से पहले पाँच पवित्र शब्दों की महानता के बारे में बताया करता हूँ। आप अपने घरों में भी अभ्यास पर बैठने से पहले पाँच पवित्र शब्दों को याद करें ऐसा न हो कि आपका मन आपको बैठते ही पाँच पवित्र शब्दों को भुला दे।

U U U

डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899

धन्य अजायब

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

10, 11, 12 अगस्त - 2007
श्री देशी लोहाना विद्यार्थी भवन
(व्यायाम विद्यालय के पीछे) कांकड़िया
अहमदाबाद (गुजरात)

---

16 पी. एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम

7, 8, 9, 10, 11 सितम्बर - 2007
26, 27, 28 अक्टूबर - 2007
23, 24, 25 नवम्बर - 2007
28, 29, 30 दिसम्बर - 2007